श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

रचनाकार
बाबू जुगलकिशोरजी युगल

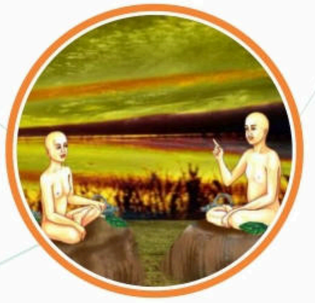

केवल-रवि-किरणों से जिसका, सम्पूर्ण प्रकाशित हैं अन्तर।
उस श्री जिन-वाणी में होता, तत्त्वों का सुन्दरतम दर्शन।।
सद्दर्शन-बोध-चरण-पथ पर, अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण।
उन देव परम आगम गुरु को, शत शत वंदन, शत शत वंदन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

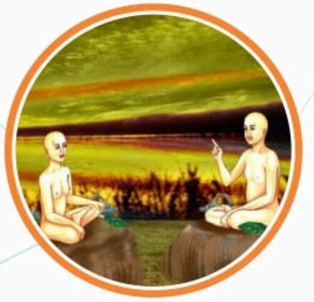

इन्द्रिय के भोग मधुर विष-सम, लावण्यमयी कंचन काया।
यह सब कुछ जड़ की क्रीड़ा है, मैं अबतक जान नहीं पाया।।
मैं भूल स्वयं निज वैभव को, पर-ममता में अटकाया हूँ।
अब निर्मल सम्यक्-नीर लिये, मिथ्यामल धोने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

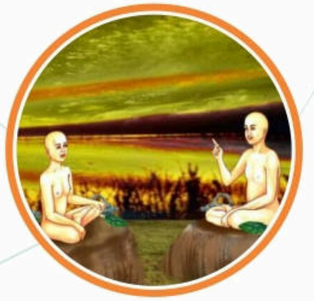

जड़-चेतन की सब परिणति प्रभु! अपने-अपने में होती हैं।
अनुकूल कहें प्रतिकूल कहें, यह झूठी मन की वृत्ती हैं।।
प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित, होकर संसार बढ़ाया हैं।
सन्तप्त हृदय प्रभु! चन्दन सम, शीतलता पाने आया हैं।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

उज्ज्वल हूँ कुन्द-धवल हूँ प्रभु! पर से न लगा हूँ किंचित् भी।
फिर भी अनुकूल लगें, उन पर, करता अभिमान निरन्तर ही॥
जड़ पर झुक-झुक जाता चेतन, की मार्दव की खण्डित काया।
निज शाश्वत अक्षय-निधि पाने, अब दास चरण-रज में आया॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

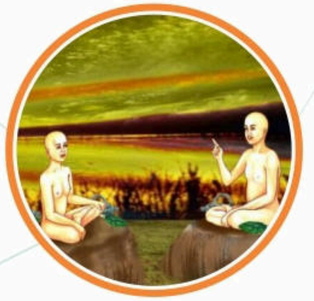

यह पुष्प सुकोमल कितना हैं, तन में माया कुछ शेष नहीं।
निज अन्तर का प्रभु! भेद कहूँ, उसमें ऋजुता का लेश नहीं।।
चिंतन कुछ फिर संभाषण कुछ, किरिया कुछ की कुछ होती हैं।
स्थिरता निज में प्रभु पाऊँ जो, अन्तर-कालुष धोती हैं।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अब तक अगणित जड़ द्रव्यों से, प्रभु! भूख न मेरी शांत हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही।।
युग-युग से इच्छा-सागर में, प्रभु! गोते खाता आया हूँ।
चरणों में व्यंजन अर्पित कर, अनुपम-रस पीने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

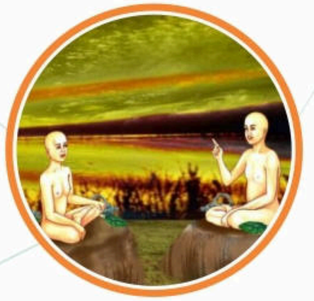

मेरे चैतन्य सदन में प्रभु! चिर व्याप्त भयंकर अँधियारा।
श्रुत-दीप बुझा हे करुणानिधि! बीती नहिं कष्टों की कारा।।
अत एव प्रभो! यह ज्ञान-प्रतीक, समर्पित करने आया हूँ।
तेरी अन्तर लौं से निज अन्तर-दीप जलाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

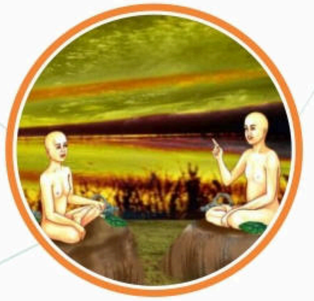

जड़ कर्म घुमाता हैं मुझको, यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी।
मैं रागी-द्वेषी हो लेता, जब परिणति होती जड़ केरी।।
यों भाव-करम या भाव-मरण, सदियों से करता आया हूँ।
निज अनुपम गंध-अनल से प्रभु, पर-गंध जलाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

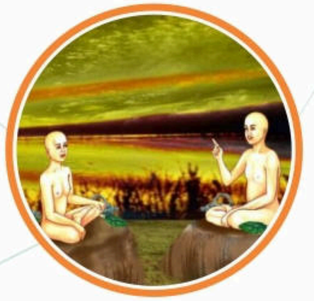

जग में जिसको निज कहता मैं, वह छोड़ मुझे चल देता हैं।
मैं आकुल-व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता हैं।।
मैं शान्त निराकुल चेतन हूँ, हैं मुक्ति-रमा सहचर मेरी।
यह मोह तड़क कर टूट पड़े, प्रभु! सार्थक फल पूजा तेरी।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

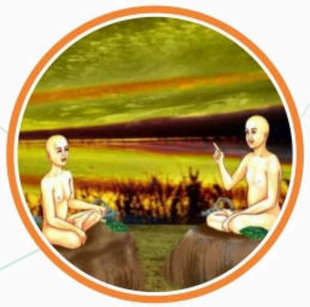

क्षण भर निज-रस को पी चेतन, मिथ्या-मल को धो देता हैं।
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनन्द-अमृत पीता हैं॥
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल-रवि जगमग करता हैं।
दर्शन बल पूर्ण प्रकट होता, यह ही अरहन्त अवस्था हैं॥
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु! निज गुण का अर्घ्य बनाऊँगा।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु! अरहन्त अवस्था पाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

भव वन में जी भर घूम चुका,
कण-कण को जी भर-भर देखा।
मृग-सम मृग-तृष्णा के पीछे,
मुझको न मिली सुख की रेखा।।

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अनित्य भावना

झूठे जग के सपने सारे,
झूठीं मन की सब आशायें।
तन-जीवन-यौवन अस्थिर हैं,
क्षण-भंगुर पल में मुरझायें।।

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अशरण भावना

सम्राट महाबल सेनानी,
उस क्षण को टाल सकेगा क्या?
अशरण मृत-काया में हर्षित,
निज जीवन डाल सकेगा क्या?

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

संसार भावना

संसार महादुखसागर के,
प्रभु दुखमय सुख-आभासों में।
मुझको न मिला सुख क्षणभर भी,
कंचन-कामिनी प्रासादों में।।

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

एकत्व भावना

मैं एकाकी एकत्व लिये,
एकत्व लिये सब ही आते।
तन-धन को साथी समझा था,
पर ये भी छोड़ चले जाते।।

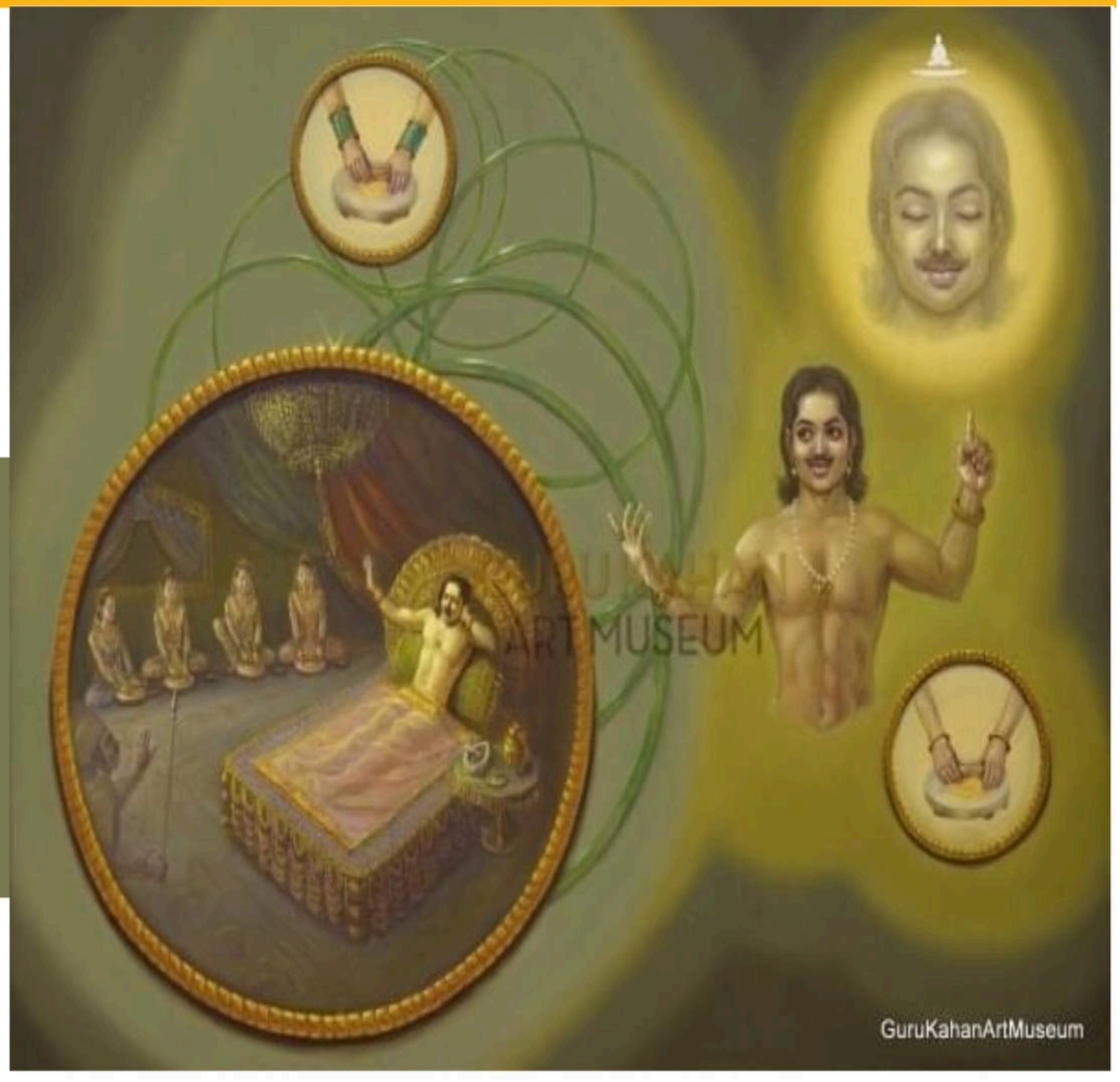

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अन्यत्व भावना

मेरे न हुए ये, मैं इनसे, अति भिन्न अखण्ड निराला हूँ।
निज में पर से अन्यत्व लिये, निज समरस पीनेवाला हूँ।।

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अशुचि भावना

जिसके शृंगारों में मेरा, यह महँगा जीवन घुल जाता।
अत्यंत अशुचि जड़-काया से, इस चेतन का कैसा नाता।।

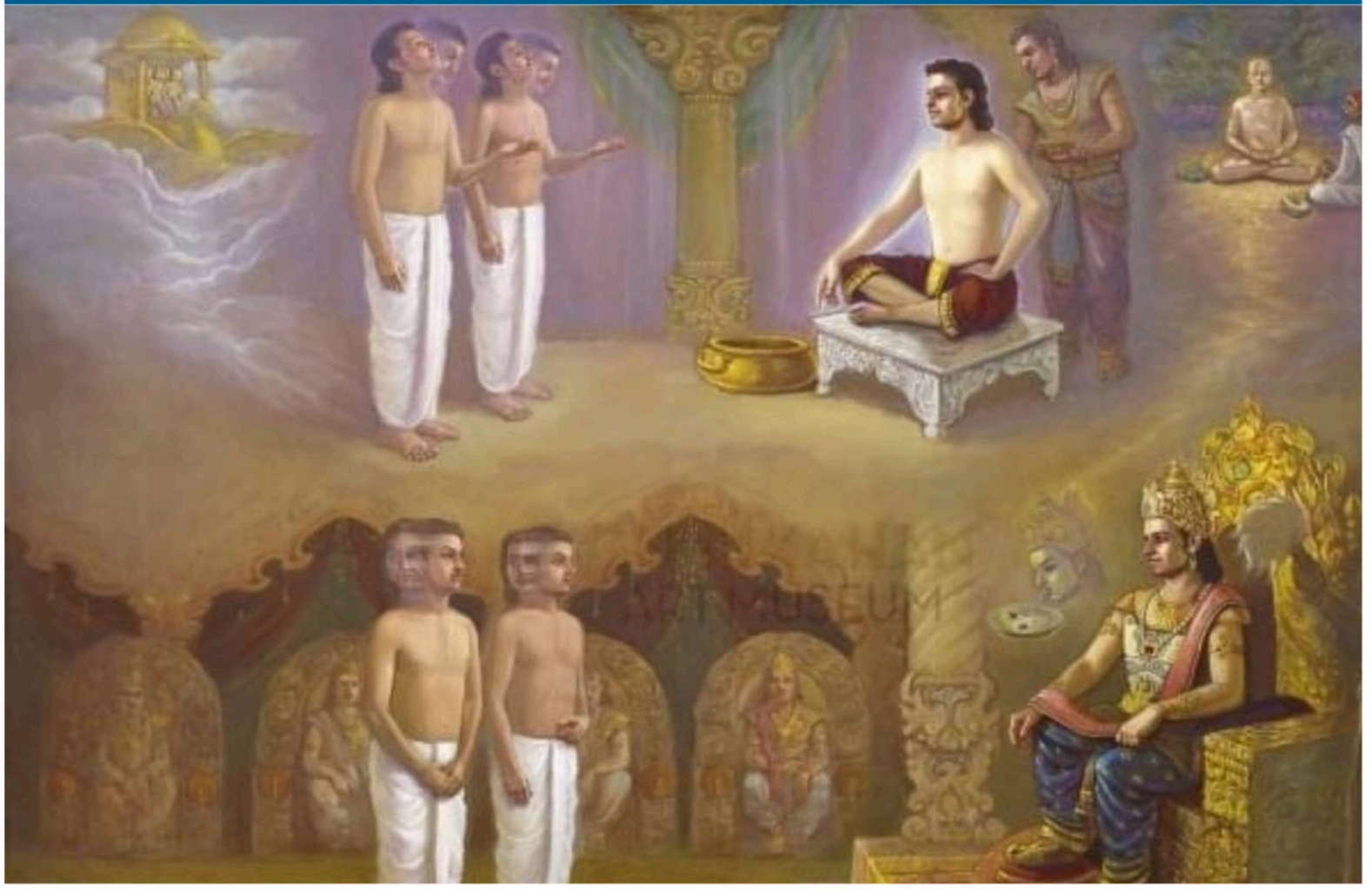

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

आस्रव भावना

दिन-रात शुभाशुभ भावों से, मेरा व्यापार चला करता।
मानस, वाणी और काया से, आस्रव का द्वार खुला रहता॥

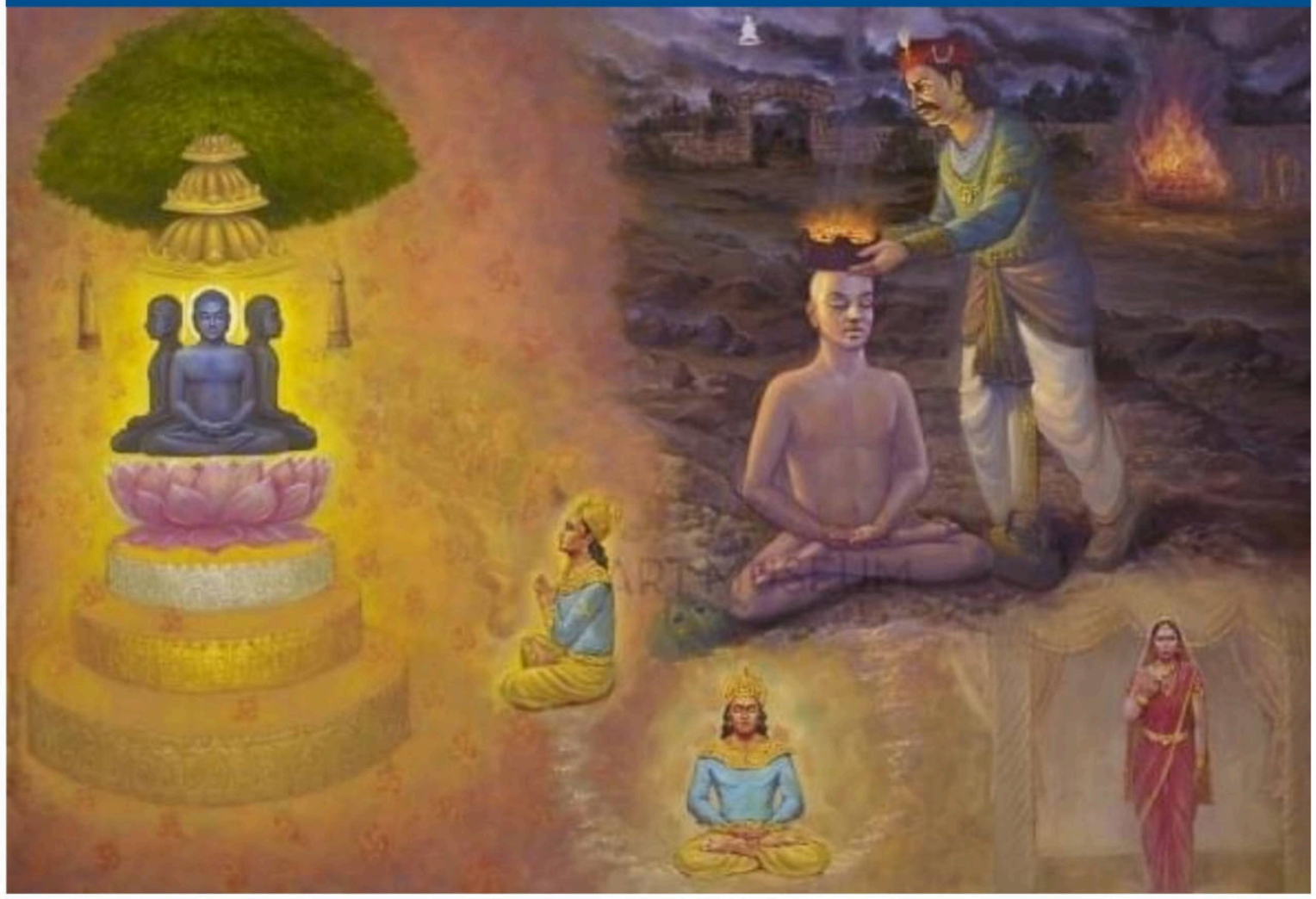

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

संवर भावना

शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तस्तल।
शीतल समकित किरणें फूटें, संवर से जागे अन्तर्बल।।

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

निर्जरा भावना

फिर तप की शोधक वह्नि जगे, कर्मों की कड़ियाँ टूट पड़ें।
सर्वांग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्झर फूट पड़ें॥

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

लोक भावना

हम छोड़ चलें यह लोक तभी, लोकान्त विराजें क्षण में जा।
निजलोक हमारा वासा हो, शोकांत बने फिर हमको क्या।।

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

बोधिदुर्लभ भावना

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो! दुर्नय-तम सत्वर टल जाये।
बस ज्ञाता-द्रष्टा रह जाऊँ, मद मत्सर मोह विनश जाये।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

धर्म भावना

चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी।
जग में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी।।

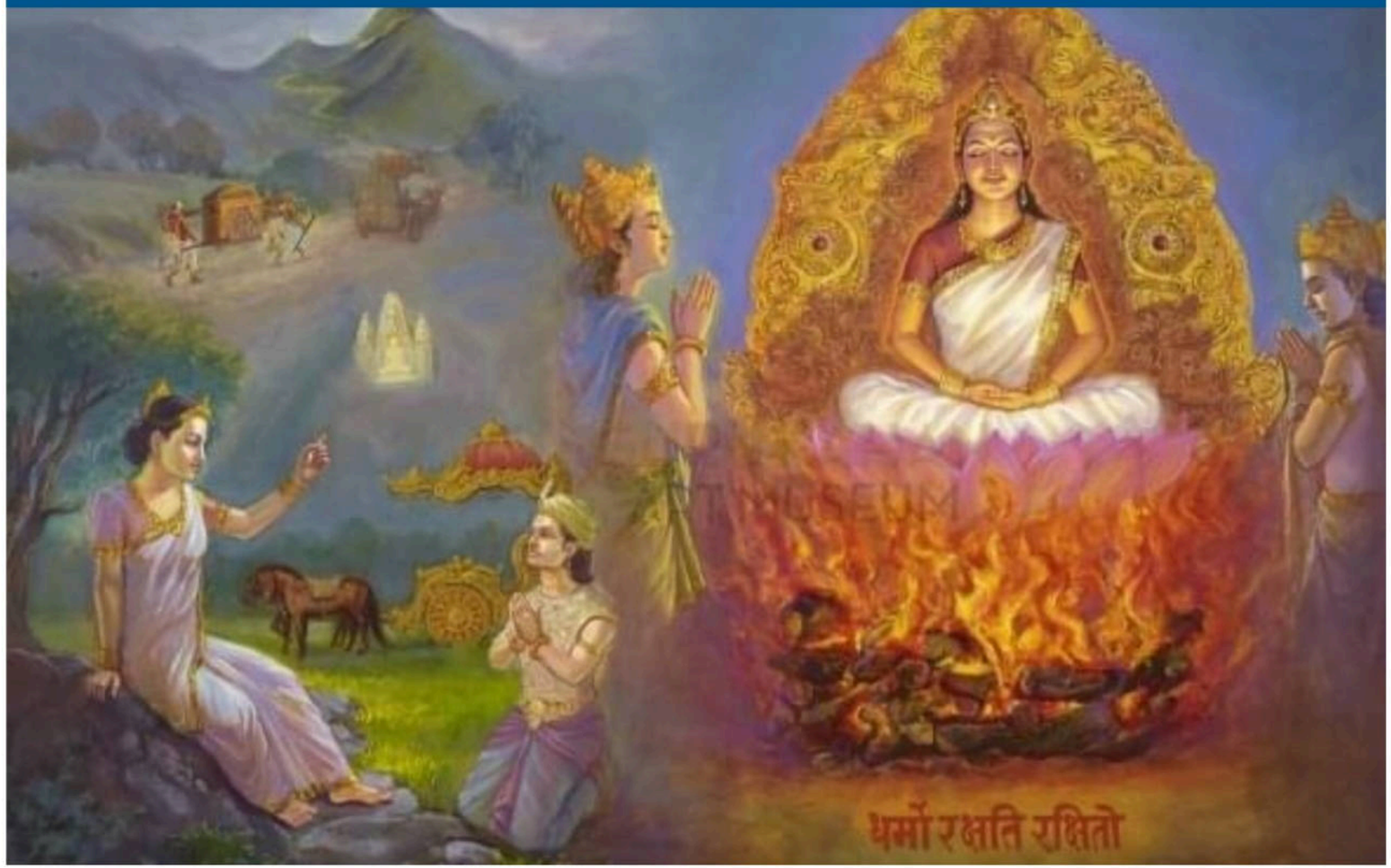

sarvodayahinsa@gmail.com 9785999100 /Sarvodayaahimsa

देव स्तवन

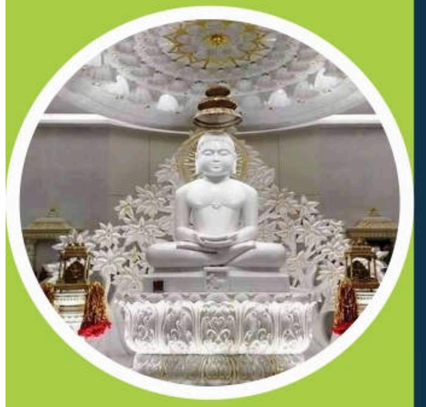

तेरे चरणों की पूजा से, इन्द्रिय सुख को ही अभिलाषा।
अबतक न समझ ही पाया प्रभु! सच्चे सुख की भी परिभाषा।।
तुम तो अविकारी हो प्रभुवर! जग में रहते जग से न्यारे।
अत एव झुके तव चरणों में, जग के माणिक-मोती सारे।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

देव स्तवन

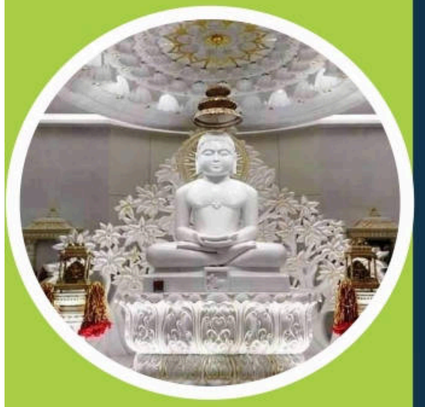

चरणों में आया हूँ प्रभुवर! शीतलता मुझको मिल जाये।
मुरझाई ज्ञान-लता मेरी, निज अन्तर्बल से खिल जाये।
सोचा करता हूँ भोगों से, बुझ जायेगी इच्छा-ज्वाला।
परिणाम निकलता हैं लेकिन, मानो पावक में घी डाला।।

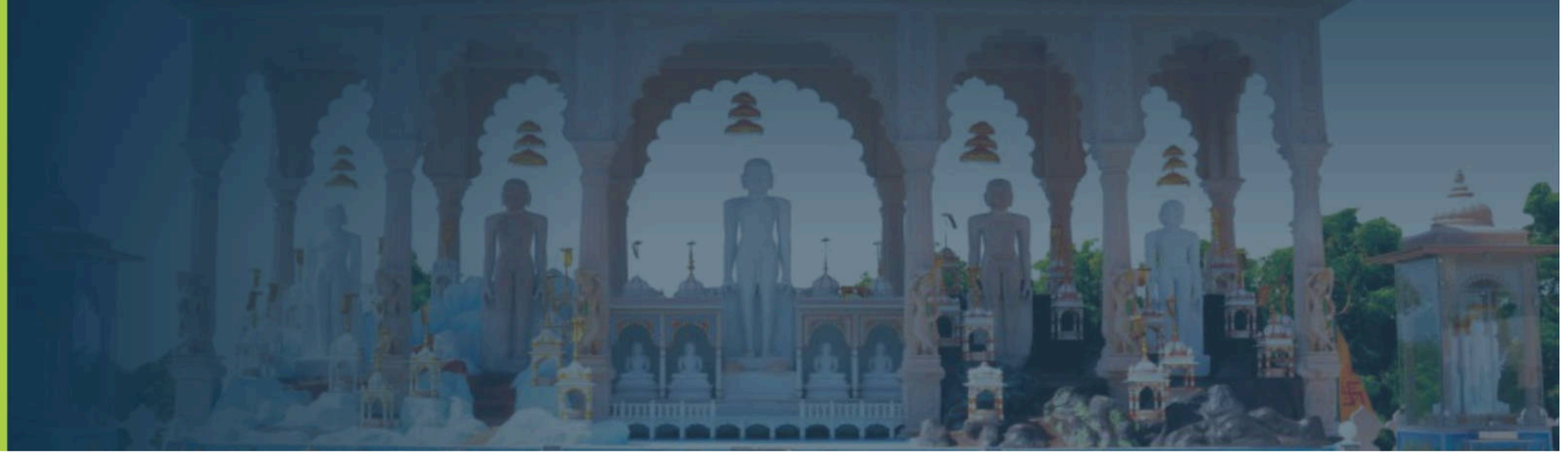

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

गुरु स्तवन

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

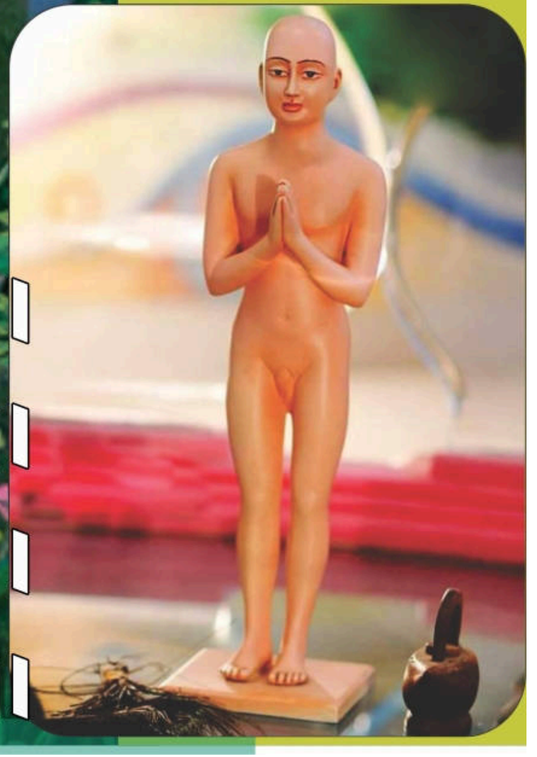

हे गुरुवर! शाश्वत सुखदर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्शन करनेवाला है।।
जब जग विषयों में रच-पच कर, गाफिल निद्रा में सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कंटक, पथ में विषकंटक बोता हो।।

गुरु स्तवन

आचार्य | उपाध्याय | साधु

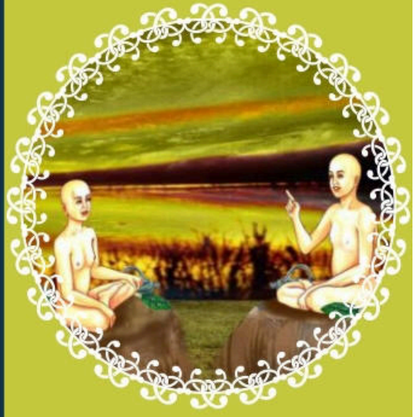

हो अर्ध-निशा का सन्नाटा, वन में वनचारी चरते हों।
तब शान्त निराकुल मानस तुम, तत्त्वों का चिंतन करते हो।।
करते तप शैल-नदी-तट पर, तरु-तल वर्षा की झड़ियों में।
समता-रसपान किया करते, सुख दुख दोनों की घड़ियों में।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

गुरु स्तवन

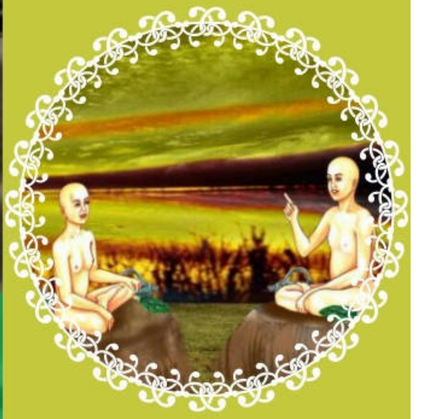

अन्तर्ज्वाला हरती वाणी, मानो झड़ती हों फुलझड़ियाँ।
भव-बन्धन तड़-तड़ टूट पड़ें, खिल जायें अन्तर की कलियाँ।।
तुम-सा दानी क्या कोई हो, जग को दे दीं जग की निधियाँ।
दिन-रात लुटाया करते हो, सम-शम की अविनश्वर मणियाँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हे निर्मल देव! तुम्हें प्रणाम,
हे ज्ञान-दीप आगम! प्रणाम।
हे शान्ति-त्याग के मूर्तिमान,
शिव-पथ-पंथी गुरुवर! प्रणाम।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शास्त्र स्तवन

स्याद्वादमयी तेरी वाणी,
शुभनय के झरने झरते हैं।
उस पावन नौका पर लाखों
प्राणी भव-वारिधि तिरते हैं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु